असत् हो तो हेतु उसमें नहीं रह सकता।

b) स्वरूपासिद्ध — यहाँ पक्ष तो असत् नहीं है, किन्तु हेतु का स्वरूप ही ऐसा है कि वह पक्ष में नहीं रह सकता जैसे शब्द द्रव्य होने के कारण अनित्य है यहाँ शब्द द्रव्य नहीं हो सकता क्योंकि वह गुण है।

c) व्याप्यत्वासिद्ध — यहाँ हेतु सोपाधिक होता है, जैसे - पर्वत वह्निमान् होने के कारण धूमवान् है, यहाँ वह्नि और धूम की व्याप्ति नियत नहीं है क्योंकि लोहे के जलते गोले में वह्नि है किन्तु धूम नहीं है। वह्नि और धूम की व्याप्ति आर्द्रेन्धनसंयोग रूपी उपाधि के कारण सोपाधिक है क्योंकि गीली लकड़ी के जलने पर ही आग से धूम उत्पन्न होता है। अतः हेतु सोपाधिक होने से व्याप्यत्वासिद्ध है।

v) बाधित — पाँचवा हेत्वाभास बाधित है। जिस हेतु के साध्य का भाव अन्य प्रमाण द्वारा सिद्ध हो वह बाध्य है जैसे - वह्नि द्रव्य होने के कारण शीतल है। द्रव्य हेतु और शीतल साध्य है।

April 2018

Wk	M	T	W	T	F	S	S
13	30						1
14	2	3	4	5	6	7	8
15	9	10	11	12	13	14	15
16	16	17	18	19	20	21	22
17	23	24	25	26	27	28	29

यहाँ शीतलता का अभाव अग्नि के उष्ण स्पर्श के प्रत्यक्ष द्वारा सिद्ध है अतः यह हेतु बाधित है। बाधित में साध्य अभाव अन्य प्रमाण द्वारा सिद्ध होता है। विरुद्ध में स्वयं हेतु ही साध्य अभाव को सिद्ध करता है, सत्प्रतिपक्ष में साध्य अभाव अन्य हेतु द्वारा सिद्ध होता है।

उदाहरण — जैसे अग्नि शीतल है क्योंकि यह एक द्रव्य है। यहाँ शीतल साध्य है और द्रव्य हेतु है यह अनुमान सही नहीं है क्योंकि हम स्पर्श ज्ञान से अग्नि में केवल शीतलता का अभाव ही नहीं पाते बल्कि उष्णता का स्पर्श अनुभव पाते हैं। इस तरह देखते हैं कि हेतु द्रव्य के द्वारा जो अनुमान सिद्ध किया जाता है, वह प्रत्यक्ष से बाधित हो जाता है। अतः इसी अनुमान का हेतु यदि अन्य किसी प्रमाण से बाधित होता है तो वह अनुमान दोषपूर्ण होता है और इस दोष को बाधित कहते हैं।